प्राक्कथन (Introduction)

प्राक्कथन (Introduction)

उदय प्रकाश समकालीन हिंदी कथा-साहित्य का शिखर हैं। वे बहुआयामी-बहुमुखी विलक्षण प्रतिभा के धनी हैं। उनका कृतित्व भी बहुआयामी है। वर्तमान साहित्यिक परिदृश्य में वे स्वयं एक अवधारणा हैं। वैसे तो हिंदी साहित्य में समय-समय पर विभिन्न अवधारणाओं का आगमन होता रहा है। परंतु वर्तमान समय में हिंदी साहित्य-जगत में उनकी चर्चा काफी ज़ोरो से चल रही है। इनमें आधुनिकतावाद, मार्क्सवाद, संरचनावाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, उत्तर आधुनिकतावाद, नव-मार्क्सवाद, उत्तर-संरचनावाद, नव-उपनिवेशवाद, भूमंडलीकरण आदि प्रमुख अवधारणाएँ विद्यमान हैं। इन विचारधाराओं में भूमंडलीकरण एक ऐसी अवधारणा है, जो सबको स्वयं में समेटे हुए है। आज भूमंडलीकरण एक ऐसी अवधारणा या प्रवृत्ति का नाम है, जो सभी विचारधाराओं को प्रभावित कर रही है। यही शोधार्थी के लिए वह खास वजह रही है, जिसने उसे बहुत आकर्षित किया है और उसके मन में जिज्ञासाओं को उद्दीप्त किया है और साथ-साथ उसकी भावनाओं को पुष्पित एवं पल्लवित किया है। इसी सिलसिले में उदय प्रकाश की रचनाओं का अध्ययन करते हुए शोधार्थी ने यह शोध कार्य 'उदय प्रकाश का कथा-साहित्य: भूमंडलीकरण का परिप्रेक्ष्य' नामक विषय पर करने की ठानी। उक्त शोध-कार्य से संबद्ध शोध-प्रबंध आठ अध्यायों में विभक्त है। इसके अध्यायों का विवरण निम्नवत है।

इस शोध-प्रबंध के प्रथम अध्याय का शीर्षक है- 'उदय प्रकाश : समय के बरअक्स व्यक्ति और समाज'। इसके अंतर्गत कथाकार उदय प्रकाश के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विचार किया गया है। इसके अलावा उदय प्रकाश का जन्म, माता-पिता की कैंसर से मृत्यु, साहित्य सृजन के प्रति उनका रुचि, कवि और कहानीकार के रूप में उदय प्रकाश, उदय प्रकाश का प्रकाशित कृतियाँ एवं अनुवाद कार्य, फ़िलम और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में उनका योगदान,पुरस्कार और सम्मान, अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में व्याख्यान और यात्राएं जैसे विषयों पर गहराई से आलोकपात किया गया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के दूसरे अध्याय में 'प्रवृत्तियों-सिद्धांतों के आईने में भूमंडलीकरण' के अंतर्गत 'भूमंडलीकरण' को स्पष्ट करते हुए विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं के माध्यम से उसका सम्यक विवेचन किया गया है। इसके साथ-साथ भूमंडलीकरण की विचारधाराएँ एवं प्रवृत्तियों, भूमंडलीकरण का चरित्र, भारत में भूमंडलीकरण एवं उसका प्रभाव और भूमंडलीकरण में बदलते जीवन संदर्भ विषयों को समझने की कोशिश की गई है।

इस शोध-प्रबंध के तृतीय अध्याय 'भूमंडलीकरण और उदय प्रकाश के कथा-साहित्य का वर्गगत चरित्र' से संबन्धित है। इसमें समाज की आर्थिक स्तरीकरण और वर्गीय ढांचा के अंतर्गत उच्च वर्ग की शोषण की प्रवृत्ति, मध्यवर्ग और निम्न वर्ग की स्थितियों पर विचार किया गया है। हाशिए पर पड़ा निम्नवर्ग और हाशिए पर होने का अर्थ को रेखांकित किया गया। निम्न मध्यवर्ग और निम्नवर्ग की परिस्थितियों को समझने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के चौथे अध्याय में 'भूमंडलीय समाजार्थिक यथार्थ और उदय प्रकाश का कथा-साहित्य' के अंतर्गत उदय प्रकाश का कथा-साहित्य के मारफ़त सामाजिक परिदृश्य, सामाजिक व्यवस्था तंत्र, सामाजिक जटिलताएं, राजनीतिक विद्रूपताएँ, हमारा समय और उदय प्रकाश, भूमंडलीय समाजार्थिक संस्कृति के बरअक्स उदय प्रकाश का कथा-साहित्य एवं आर्थिक परिदृश्य को भी खँगालने का प्रयास किया गया है।

इस शोध- प्रबंध के पांचवे अध्याय 'भूमंडलीकरण, उपभोक्तावादी संस्कृति में मूल्यों का प्रश्न और उदय प्रकाश का कथा-साहित्य' से संबन्धित है। इसमें भूमंडलीय उपभोक्तावादी सांस्कृतिक का परिदृश्य, भूमंडलीय उपभोक्तावादी संस्कृति और मानव मूल्यों के प्रश्न तथा भूमंडलीय उपभोक्तावादी संस्कृति और मानव मूल्यों के प्रश्न के परिप्रेक्ष्य में उदय प्रकाश का कथा-साहित्य पर गहन विचार-विमर्श किया गया है।

इस शोध-प्रबंध के छठे अध्याय में 'भूमंडलीकरण की प्रवृत्तियों के संदर्भ में उदय प्रकाश के पात्र' से संबन्धित है। इसके अंतर्गत रचनाकार के पात्रों के परिवेश को, लोक स्थिति और पात्रों के चयन, चयन की पृष्ठभूमि एवं भूमंडलीय संस्कृति में पात्रों का चयन की आवश्यकता पर आलोक पात किया गाय है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के सातवें अध्याय ‘भूमंडलीकरण के दौर में विचारधारा का प्रश्न और उदय प्रकाश का कथा-साहित्य’ में विश्वग्राम का सपना, सत्ता और विचारधारा तथा भूमंडलीकरण की यथार्थ स्वरूप पर विचार-विश्लेषण करते हुए विभिन्न विचारधाराओं जैसे-आधुनिकतावाद, उत्तर आधुनिकतावाद, मार्क्सवाद, नव-मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद, आदि विषयों पर संक्षिप्त आलोकपात किया गया है। इसके साथ उदय प्रकाश की कहानियों का वैचारिक पक्ष को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।

अंत में ‘उपसंहार’ के माध्यम से शोध-प्रबंध का निचोड़ प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है। इसमें शोधार्थी की निष्कर्षात्मक विचार और टिप्पणियाँ वहाँ पर अवश्य विद्यमान है।

कृतज्ञता ज्ञापन के क्रम में शोधार्थी के शोध-निर्देशक डॉ. सुनील कुमार द्विवेदी का नाम अग्रणी है। उनकी प्रेरणा से शोधार्थी ‘उदय प्रकाश का कथा-साहित्य: भूमंडलीकरण का परिप्रेक्ष्य’ नामक विषय पर शोध कार्य करने के लिए उद्यत हुआ। उनके सहयोग के बिना यह कार्य अधूरा ही रह जाता। विभागीय वरिष्ठ शिक्षिका प्रो. (डॉ.) मनीषा झा के प्रति भी शोधार्थी अपना आभार व्यक्त करता है, उन्होंने भी शोधार्थी को जगाए रखा। इसी क्रम में शोधार्थी अपने पिता स्व. श्री नगेन्द्र नाथ सरकार एवं माता श्रीमती स्वर्णवाला सरकार, सास श्रीमती जया राय के आर्शीवचनों तथा प्रेरणाओं के प्रति अकुंठ श्रद्धा-भाव से भरा हुआ है। इसी क्रम में

शोधार्थी अपनी सहधर्मिणी अमृता का भी आभारी है, जिन्होंने निराशा के क्षणों में आशा का संचार किया एवं स्नेह देकर उत्साहित किया। अंतत: उन तमाम मित्रों के प्रति भी शोधार्थी आभारी है, जिनकी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस कार्य के आकार लेने में भूमिका रही है।

Prashanta Sarkar

हस्ताक्षर

(प्रशांत सरकार)

पंजीकरण संख्या: Ph.D/Hindi(9)/3742/R-2012

हिंदी विभाग पुनः पंजीकरण संख्या: Ph.D/Hindi(9)/3233/R-2017

उत्तर बंग विश्वविद्यालय,

राजा राममोहनपुर,

जिला-दार्जिलिंग, प. बंगाल

दिनांक 26/09/2022